जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित भिक्षु वांड्मय का प्रथम खण्ड विमोचित आचार्य भिक्षु का साहित्य तेरापंथ का शास्त्र है : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर V सितम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित भिक्षु वांड्मय का प्रथम खण्ड विमोचति करते हुए कहा कि तेरापंथ आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का साहित्य तेरापंथ का शास्त्र है। भिक्षु स्वामी ने राजस्थानी भाषा में हजारों पद्यों की व्याख्या पस्तुत की। ऐसे साहित्य के सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे सौंपा। मेरे साथ मुनि सुखलाल, मुनि कीर्तिकुमार, मुनि विश्रुत कुमार और अनेक साधु-साध्वियां पूर्ण निष्ठा से कार्य कर रहे हैं। आज मुझे प्रसन्नता है कि इसका प्रथम खण्ड मेरे हाथों में है। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु का साहित्य व्यक्ति के जीवन को नई दिशा देने वाला है, यह साहित्य पढ़ने वाला आचार्य भिक्षु को 18वीं सदी का महान दार्शनिक कहने में संकोच नहीं करेगा।

आचार्य महाश्रमण ने सम्पादन सहयोगी रहे मुनि सुखलाल के सन्दर्भों में कहा कि मुनिश्री मनीषी संत है, इनकी राजस्थानी भाषा पर पकड़ है, इसलिए इनकी उपयोगिता लगी। मुनि कीर्तिकुमार एवं मुनि विश्रुतकुमार की निष्ठा और लग्न के साथ कार्य कर रहे हैं। अन्य अनेकों का योग इसमें लगा है, सबके योग से आज एक बहुत सुन्दर उपहार प्राप्त हुआ है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने आचार्य भिक्षु के आगम अध्ययन की गहराई पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने आगम सूत्रों की राजस्थानी भाषा में व्याख्या प्रस्तुत कर एक महान कार्य किया। उन्होंने आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के युग में प्रारंभ हुए आगम अनुसंधान एवं सम्पादन के कार्य की भी चर्चा की।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि आचार्य भिक्षु तैजस्वी महापुरुष थे। उन्होंने जो साहस किया वैसा साहस बहुत कम लोग कर पाते हैं। उन्होंने अगाम अनुसंधान कर सत्य को प्रकट किया। मुनि ने कहा कि आचार्य भिक्षु को समझने के लिए उनके साहित्य का कुछ भाग हिन्दी में प्रस्तुत करने का बीड़ा आचार्यश्री महाश्रमण ने उठाया है, जिनकी फलश्रुति ह, भिक्षु वांड्मय का प्रथम खण्ड मुनि कीर्तिकुमार ने वांड्मय की प्रथम कृति भेंट की। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

इतिहास मंथन प्रतियोगिता-द्वितीय का पुरस्कार वितरण

'नायाधम्मकहाओ' पर आधारित आगम मंथन प्रतियोगिता-पंचम का शुभारंभ

सरदारशहर 1 सितम्बर, 2010

जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित इतिहास मंथन प्रतियोगिता द्वितीय के पुरस्कार आज आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में वितरित किये गये। प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं क्रमशः रिंकेश बैद, रशमी संचेती, प्रिया गधैया को प्रतियोगिता प्रायोजक श्रीमती सुशीला श्यामसुखा ने मोमेंटो एवं पुरस्कार राशि के चैक प्रदान किये। सम्पूर्ण भारत से लगभग एक हजार प्रतियागियों में प्रथम तोनों स्थानों पर सरदारशहर के प्रतिभागी रहने पर उपस्थित जनता ने ओम अर्हम् की हर्ष ध्वनि के साथ अपनी खुशी जाहिर की। इस मौके पर आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति की ओर से सरदारशहर के सभी प्रतिभागियों का प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया गया। जैन विश्व भारती के निदेशक राजेन्द्र खटेड़ ने प्रतियोगिता के सन्दर्भ में विचार रखे। जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री भूरामल श्यामसुखा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किये। जैन विश्व भारती के ट्रस्टी बिमलकुमार नाहटा ने प्रतियोगिता प्रायोजक भूरामल श्यामसुखा, मांगीलाल भण्डारी, फतेहचन्द सिंघी, विमलसिंह घोड़ावत का सम्मान किया। भूरामल श्यामसुखा ने प्रतियोगिताओं की व्यवस्था में सहयोगी के तौर पर कान्ता चिण्डालिया का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन निशा सेठिया ने किया।

'नायाधम्मकहाओ' पर होगी अगली प्रतियोगिता

जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा आगामी आगम मंथन प्रतियोगिता 'नायाधम्मकहाओ' ग्रंथ पर होगी। इस प्रतियोगिता हेतु आचार्य महाश्रमण ने नायाधम्म ग्रंथ पर होगी। इस प्रतियोगिता हेतु आचार्य महाश्रमण ने 'नायाधम्मकहाओ' एवं उसकी प्रश्न पुस्तिका का विमोचन किया। ग्रंथ की प्रथम कृति छोटूलाल सेठिया की पुत्री रतनीदेवी ने आचार्य महाश्रमण को समर्पित की।

आज दिये जायेंगे क्वीज प्रतियोगिता के पुरस्कार

गत दिनों जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आचार्य महाश्रमण क सान्निध्य में आयोजित महात्मा महाप्रज्ञ क्वीज प्रतियोगिता के पुरस्कार आज (2 सितम्बर) प्रातः के प्रवचन कार्यक्रम वितरित किये जायेंगे। उक्त जानकारी स्थानीय सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने दी। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहने वाले प्रतियोगियों एवं अन्य दो ग्रुपों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)